शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X
Vol. X, No.II, pp (799-804) April - June 2019

शाश्वत् मानव मूल्य एवं शांति आधारित शिक्षा की प्रासंगिकता

डा0 बिजय पाल सिंह
असि0 प्रोफे0, टीचर एजुकेशन विभाग
एस0 एम0 कालिज, पाली डूंगरा, मथुरा
Email: vpsinghmeerut101@gmail.com

सारांश

समय का चक्र आगे बढता जा रहा है । एक युग बीतता है, नया युग करवटें लेता है । प्रत्येक युग की प्रथाऐं, रीति–रिवाज, सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक मान्यताऐं और सामाजिक मूल्य युग बदलने के कारण पुराने पड जाते है । लेकिन कुछ मूल्य ऐसे भी होते है जिनपर वक्त के थपेडों का असर नही पडता, वे शाश्वत् रहते है ।

आधुनिक समाज में भोगवादी प्रवृत्तियाँ बढ रही है । आज धन, पूँजी और सम्पत्ति ही मनुष्य का देवता है । उपभोक्तावादी संस्कृति ने श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को छिन्न– भिन्न कर दिया है । आदमी दिशाहीन एवं अशान्त होकर त्रस्त एवं पीडित है । इसके कारण हर क्षण नये– नये प्रश्न और नई– नई समस्यायें उपस्थित हो रही है ।

प्रस्तावना

आधुनिक समाज में भोगवादी प्रवृत्तियाँ बढ रही है । आज धन, पूँजी और सम्पत्ति ही मनुष्य का देवता है । उपभोक्तावादी संस्कृति ने श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को छिन्न– भिन्न कर दिया है । आदमी दिशाहीन एवं अशान्त होकर त्रस्त एवं पीडित है । इसके कारण हर क्षण नये– नये प्रश्न और नई– नई समस्यायें उपस्थित हो रही है ।

आज विश्व में क्षेत्रवाद, भाषावाद, धर्म, जाति, सम्प्रदाय आदि के आधार पर विघटनकारी ताकतें अपने चरम पर है । इनकी हिंसक एवं विनाशकारी गतिविधियों से कोई ऐसा देश नही है जो अछूता हो। ऐसे युग में जहॉ मूल्यहीन संस्कृति का बोल बाला है, हिंसात्मक घटनाएँ बढ रही है, आवश्यक है कि व्यक्तियों में शाश्वत् मूल्यों का समावेश किया जाये । इसके लिए एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था चाहिए जिसमें शाश्वत् मूल्यों को व्यक्ति को आत्मसात करवाने की क्षमता हो । यह कार्य शांति आधारित शिक्षा जो शाश्वत् मूल्यों पर आधारित हो, ही कर सकती है । प्राचीन समय में मूल्यों के संरक्षण एवं हस्तान्तरण का दायित्व गुरूकुलों एवं सभी धर्मगुरूओं के ऊपर था । प्राचीन काल से ही कुछ ऐसे मूल्य निश्चित किये गये जिनको हर युग एवं समाज में शाश्वत् माना गया, जिसके कारण समाज में शांति, सहिष्णुता एवं समभाव बना रहता था । आज समाज की जटिलता के कारण यह दायित्व शिक्षण संस्थानों पर आ गया है । कुछ मूल्य जो हर युग में शाश्वत् है निम्नलिखित है :–

(1) वैयक्तिक मूल्य

1सत्य

सत्य का अर्थ है, यथार्थता, जो तथ्य जैसा है उसे मानना, स्वीकार करना और निभाना सत्य है । सत्य क्या है ? यह एक विवादात्सपद प्रश्न है । आदिकाल से यह प्रश्न मानव के मन में जिज्ञासा एवं संदेह पैदा करता रहा है । वेद, उपनिषद, रामायण, कुरान, बाइबिल, गुरूग्रंथ साहब, त्रिपिटक एवं जैन आगमों और निगमों में सबने इस पर अपने विचार रखे है लेकिन यक प्रश्न अनसुलझा रहा ।

महावीर ने अनेकान्तवाद द्वारा सत्य के प्रति नवीन दृष्टि प्रदान की । उन्होंने कहा कि सत्य को सीमित या बांधो मत । तुम अनेक दृष्टियों से देखोगे तो तुम्हारा अदृश्य भाग दृश्य भाग से काफी बडा है ।

एक ओर शाश्वत् सत्य है । दूसरी ओर सामयिक सत्य जो हमेशा घटित होता है। शाश्वत् सत्य त्रैकालिक है और सामयिक सत्य सापेक्ष है। जो व्यक्ति इन दोनों में अन्तर नही कर पाता वह उलझ जाता है ।

सत्य सर्वश्रेष्ठ जीवन मूल्य है । जिसने सत्य को प्राप्त कर लिया उसके जीवन में समस्त मूल्यों को स्वतः स्थान मिल जाता है । सत्य व्यक्ति के भीतर है उसे व्यक्ति को अपने भीतर ही खोजना चाहिए ।

2 अहिंसा

अहिंसा जीवन का मूलमंत्र है । यह जीवन की परम ज्योति है । मानव जाति के कल्याण के लिए अहिंसा ही एक मात्र साधन है । महाकाव्य काल में विश्वामित्र अहिंसा के व्रती थे। भगवान बुद्ध ने ''बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'' की घोषणा की । महावीर स्वामी ने अहिंसा को गुणों में प्रथम स्थान दिया । भारतीय इतिहास में अशोक ने हिंसा से अंहिसा की राह अपनाया। अशोक ने अहिंसा का प्रचार किया । वैष्णव भक्त कवियों ने मानवता में प्रेम को महत्व प्रदान कर अहिंसा की प्रतिष्ठा की । आधुनिक युग में महात्मा गाँधी ने सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक सभी क्षेत्रों में अंहिंसा पालन का आग्रह किया ।

आज मानव सभ्यता, संस्कृति मानवता विनाश के कगार पर है मानवीय सम्बन्धों में आज विघटन का दौर तीव्र है । व्यक्तिवादी संस्कृति चरम पर है । आज के युग में अहिंसा सबसे अधिक प्रसांगिक है ।

3 धैर्य

आज के युग में आदमी अधीर हो रहा है । आज कोई व्यक्ति प्रतीक्षा नही करना चाहता। आज हर जगह अधीर व्यक्तियों को देखा जा सकता है । धैर्य महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है । कठोपनिषद में कहा गया है कि विधाता ने बहिर्मुख बनाए है, इस कारण व्यक्ति बाहर देखता है, आत्मा के भीतर नही । कोई धीर पुरूष ही इच्छा से युक्त होकर ऑखें खोलकर परमात्मा को देखता है । महाभारत में विदुर जी कहते है कि ''पुरूष का शरीर एक रथ है आत्मा सारथि है, इन्द्रियॉ घोडे है और इस घोडे पर सावधान कुशलयुक्त धीर जन संसार में सफलता पूर्वक

विचरण करते है।'' भगवान महावीर स्वामी सहनशीलता और धैर्य की साक्षात प्रतिमूर्ति थे । साधना के लिए ध्यान के लिए धैर्य अति आवश्यक है ।

4 सहिष्णुता

आज का युग असहिष्णुता का युग है । आज व्यक्ति और परिवार जाति और देश असहिष्णुता की ओर बढ रहा है । आज पिता– पुत्र, माता–पुत्र, भाई–बहन, मित्र–मित्र, गुरू–शिष्य तथा राजनेता एवं जनता आदि के बीच असहिष्णुता के कारण सम्बन्धों में विघटन उपस्थित हो गया है । इन सम्बन्धों के विघटन का मूल है मनुष्य ।

सहिष्णुता का अभिप्राय है एक दूसरे की कमजोरियों को सहना । सहना व्यक्ति का धर्म है । सहिष्णुता का फल है– शांति । सहिष्णुता सर्वत्रव्याप्त होनी चाहिए । यह गृहस्थ में भी होनी चाहिए और साधु में भी, शिक्षक में भी और विद्यार्थी में भी, राजनेता में भी और दार्शनिक में भी, स्त्री में भी और पुरूष में भी, बडे और छोटे में भी । सहनशीलता व्यक्ति का आत्मधर्म है । सहिष्णुता के द्वारा ही व्यक्ति को नये जीवन और नये समाज की रचना करनी है ।

5 मृदुता

आधुनिक युग में मनुष्य को यांत्रिक बना दिया है । इस युग में मनुष्य को व्यक्तिनिष्ठ और व्यक्तिवादी, स्वार्थी एवं स्वकेन्द्रित बना दिया है । आज जहॉ देखें वही कटुता की अमर बैल फैल रही है ।

मृदुता का अभिप्राय है मधुरता । कोमलता ही मृदुता है । जिस व्यक्ति के वाणी और व्यवहार में मधुरता है उसके व्यक्तित्व में मृदुता है । कटुता विष है मृदुता अमृत । आज व्यक्ति और परिवार जाति और समाज, देश और समग्र विश्व कठोरता और कटुता के विष के कारण मृतपाय हो रहा है, इसके लिए आवश्यकता है कि उसे मधुरता और मृदुता का अमृतपान कराया जाये । सामाजिक, अस्तित्व, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय अखण्डता सामाजिक समरसता और मानवीय एकता के लिए मृदुता नींव का पत्थर है ।

6 करूणा

मानव जीवन की कहानी कूरता की कहानी है । प्राचीन युग से लेकर आज तक कूरता ने अपने काले डैन फैला कर प्राणि मात्र को आतंकित किया है । मानवीय सभ्यता के तीन महान शत्रु है– भोग, अधिकार और धन । मनुष्य की कूरता के मूल में यही तीन तत्व है । मनुष्य के स्वार्थ एवं अमानवीय दृष्टिकोण से कूरता उत्पन्न होती है ।

हृदय परिवर्तन का सूत्र है– करूणा । सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति प्रेम में करूणा का ही प्रसार है । प्रेम और स्नेह, ममता और वात्सल्य में भी करूणा का ही प्रसार है । आज आवश्यकता है व्यक्ति में रागात्मक चेतना का विकास किया जाये । जब व्यक्ति में रागात्मक चेतना जागती है तब वह दूसरे व्यक्ति के कष्ट को पीडा को दुःख को यातना को अनुभूत करता है । जब संवेदनशीलता जागती है तब करूणा का जन्म होता है ।

करूणा सदाचार का, नैतिकता का, मानवता का मूल है । जिस व्यक्ति में करूणा है वह सही अर्थ में सामाजिक है । जिसमें करूणा है वह सही अर्थ में नैतिक है जिसमें करूणा है वह सही अर्थ में प्रमाणित है । आज आवश्यकता है व्यक्ति में करूणा का मंत्र फूंका जाये ।

7 स्वावलम्बन

आज मनुष्य अकर्मण्यता के रोग से ग्रस्त है । आज मनुष्य पराश्रित परवश एवं परावलम्बी हो गया है । आज यांत्रिक जीवन में मनुष्य को पूर्णतः यंत्रों पर आश्रित कर दिया है। वह हर कार्य के लिए जी चुराता है ।

स्वावलम्बन नैतिक जीवन की पहली शर्त है । क्योंकि स्वावलम्बी व्यक्ति परिग्रही नही अपरिग्रही होता है, वह भोगी नही योगी होता है, वह अहंकारी नही विनयशील होता है । स्वावलम्बन व्यक्तित्व का नई ऊर्जा देती है । जिस व्यक्ति को अपने पर, अपने पुरूषार्थ पर भरोसा नही उस व्यक्ति का अस्तित्व व्यर्थ है । व्यक्ति अपने पुरूषार्थ से अपना भाग्य बदल सकता है ।

8 कर्तव्यनिष्ठा

आधुनिक समय में लोग अधिकारों की मांग कर रहे है और कर्तव्य की उपेक्षा कर रहे है । कर्तव्य की ओर किसी का ध्यान नही है । अधिकारों की अंधी दौड और दायित्व बोध के अभाव के कारण आज व्यक्ति स्व केन्द्रित हो गया है । कर्तव्य का सही बोध आज के युग की अनिवार्यता है ।

श्रीमद्भागवत गीता कर्मयोग का ज्वलंत प्रतीक है । गीता के अनुसार '' जो मनुष्य मन से इन्द्रियों को वश में करके अनासक्त हुआ, कर्मेन्द्रियों से कर्मयोग का आचरण करता है वह श्रेष्ठ है ।'' प्रत्येक व्यक्ति को अपना कर्तव्य बोध होना चाहिए । कर्तव्य निष्ठ व्यक्ति में श्रेष्ठ नैतिक मूल्यों के प्रतिफल के फलस्वरूप उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण और संतुलित विकास होगा । कर्तव्य निष्ठा वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सफलता महत्वपूर्ण सूत्र है ।

9 दृढ निश्चय

पंच तंत्र में कहा गया है कि ''कार्य उद्यम से सिद्ध होते है, मनोरथ या इच्छा करने मात्र से नही । जो होनहार है, वही होगा ऐसा निकम्मे लोग कहते है ।'' अपनी सफलता सुख और प्रसन्नता की नींव दृढ आत्मविश्वास, निश्चय या संकल्प ही है । यही वह नींव है जिसपर सफलता के भवन का निर्माण होना है । भ्रम संदेह और निराशा तो जहर समान है जो शक्ति, आकांक्षा, दृढता और विश्वास को मिटा देता है । दृढ विश्वास का कवच ही हमें इनसे बचा सकता है ।

''दृढ निश्चय ही सफलता की कुंजी है ।''

10 परोपकार

स्कंद पुराण के अनुसार ''परोपकार रहित मनुष्य का जीवन धिक्कार है । उससे तो पशु ही धन्य है जिनका चमडा तक दूसरों के काम आता है।'' नदियां स्वयं का जल नही पीती, वृक्ष स्वयं फल नही खाते। इसी प्रकार सज्जन व्यक्ति परोपकार के लिए ही जन्म लेते है ।

परोपकार मानव का सच्चा धर्म है । हमें सदैव परोपकार करते रहना चाहिए । सावधानी यह रखी जानी चाहिए कि अपने कार्यो की स्वयं चर्चा नही करके निःस्वार्थ भाव से दूसरों के कल्याण में लगा रहना चाहिए । यही सच्चा उपकार एवं सेवा है ।

11 ईमानदारी

ईमानदारी मनुष्य की सर्वोत्तम कृति है । आज व्यक्ति अपना जीवन स्तर सुधारने के लिए अनेक अनैतिक उपायों से धन कमाने में जुटा है । किन्तु यह सत्य है कि ईमानदारी सर्वाधिक विश्वसनीय तत्व है । बेईमानी व्यक्ति अन्ततः दुःख एवं विपत्ति से ग्रस्त होकर पश्चाताप करता है । बईमानी से कमाया धन क्षणिक आनन्द देता है, उसके पतनशील परिणाम दिखाई नही देते । इसलिए ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है । ईमानदार व्यक्ति का सोचना लगभग हमेशा न्याय पूर्ण होता है । ईमानदारी से सुख और शान्ति मिलती है । ईमानदारी आत्मविश्वास आत्मभिमानता का विकास करती है । ईमानदार व्यक्ति की असफलता भी प्रतिष्ठित होती है ।

12 त्याग

विनोबा भावे ने कहा है कि ''जिस त्याग से अभिमान उत्पन्न होता है वह त्याग नही है, त्याग से शान्ति मिलनी चाहिए । अभिमान का त्याग ही सच्चा त्याग है ।'' गीता में भगवान कृष्ण कहते है ।'' सभी कुछ त्याग कर मेरी शरण में चले आओ यही मोक्ष का सच्चा रास्ता है।'' वास्तव में त्याग मय जीवन ही सच्चा मानव जीवन है। त्याग से ही संतोष प्राप्त होता है । त्याग में ही आत्मोन्नति निहित है ।

13 प्रेम

संसार में जितने भी जड चेतन जीव है, उन सभी में ईश्वरीय अंश मानकर प्रत्येक के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए बिना भेद– भाव के प्रेम करना ही मानव कर्तव्य है । प्रेम हृदय में ज्योति के समान रहता है हम ही घृणा के आवरण से उसका प्रकाश बाहर तक फैलने से रोकते है । प्रेम के व्यापक स्वरूप को समझकर निःस्वार्थ त्यागमय, सन्देह रहित, प्रेम की ओर निर्लिप्त रह कर हम प्रवृत्त हो सके तो इसी में हमारे स्वयं का तथा देश का और समस्त जग का कल्याण निहित है ।

14 दया

हमारे सभी महापुरूषों ने दया को महत्वपूर्ण माना है । हृदय में दया का स्त्रोत सदैव बहता रहे तभी हम मानव कहलाने के अधिकारी है । दूसरों पर जो दया दिखलाता है वह परोक्ष से अपने लिए ही सहानभूति उत्पन्न करता है । दया से महान कुछ भी नही दया इस जीवन का सार है । दया वह भाषा है जिसे बहरे भी सुन सकते है, गूँगे भी समझ सकते है ।

15 क्षमा

क्षमा को एक विशेष शक्ति माना गया है इसका अपना स्वतन्त्र मूल्य है। कोई अपराध करता है, पीडा पहुँचाता है, तकलीफ देता है – निन्दा अपमान इत्यादि करता है तो उसे सहन करने को, माफ करने क्षमा कहते है । क्षमा करना एकदम से नही हो पाता । इसके लिए

प्रयत्न शील रहना पडता है । क्षमा तभी उचित और सहज होती है जब हम स्वभाव से ही क्षमा करते है किसी परिस्थिति या दबाव से नही । क्षमा के समान दूसरा कोई तप नही है । स्वर्ग भी उनके लिए है जो क्रोध को वश में रखते है ।

निष्कर्ष

यह निर्विवाद सत्य है कि आज का युग मूल्यहीनता का युग है । हमें उत्कृष्ट मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात करना है । शिक्षा से ही व्यक्तित्व का विकास होता है । शिक्षा ही मूल्य प्रवृत्तियॉ पर नियंत्रण मार्गान्तीकरण और उदात्तीकरण करती है । आज के समाज की समस्याओं का हल मूल्य एवं शान्ति आधारित शिक्षा के द्वारा ही संभव है । शिक्षा द्वारा ही सामाजिक भावना और व्यवसायिक कुशलता उत्पन्न होती है । शिक्षा भौतिक सम्पदा प्रदान करती है, आत्म निर्भर बनाती है, अनुभवों का पुनर्निमाण और उनकी पुनर्रचना करती है, कार्यक्षेत्रों का व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करती है, नेतृत्व के लिए प्रशिक्षित करती है, राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करती है, सामाजिक दायित्व की भावना उत्पन्न करती है । इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक प्रतिमानों का संरक्षण हस्तांतरण परिशोधन और नवसृजन करती है । किन्तु यह तभी संभव है जब मूल्य परक शांति आधारित नैतिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था हो ।

युवा पीढी के व्यक्तित्व को इस प्रकार ढालना है कि साम्प्रदायिक, जातिवाद, भाषावाद और क्षेत्रवाद पर करारी चोट पडे । हमें श्रेयस्कर जीवन मूल्यों द्वारा नये मनुष्य की रचना करनी है । विकास और हास की प्रक्रिया अनवरत चल रही है । हर युग में मनुष्य ने कल्पना की है कि आदमी अच्छा बने, परिवार अच्छा बने, समाज अच्छा बने, राष्ट्र और पूरा विश्व अच्छा बने।

वर्तमान समाज में मूल्यों का हास हमारी शिक्षा के लिए एक गम्भीर चुनौती है, जिसे स्वीकार करके शिक्षा को ही मूल्यों का विकास करना होगा तथा शिक्षा में सुधार द्वारा ही इन मूल्यों के हासन को रोका जा सकता है । हम इस समय इक्कीसवीं शताब्दी के विशाल एवं आश्चर्यजनक सत्य विज्ञान की ओर झुक रहे है ऐसे में यदि अंहिसा और विज्ञान साथ– साथ होंगे तो वहां समता न्याय वैभाव एवं आनन्दपूर्ण जीवन होगा ।

संन्दर्भ ग्रंथ

1 भाटिया बल्देव – *शिक्षा के दार्शनिक आधार*
2 स्वामी विवेकानन्द – *हमारी वर्तमान शिक्षा*
3 *मूल्यपरक शिक्षा* – आर लाल बुक डिपो मेरठ
4 सफाया रघुनाथ – *भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्यायें ।*
5 भारतीय शिक्षण मण्डल – *मूल्य शिक्षा*
6 डा0 शिवपाल सिंह – *नैतिकता और वैश्विक शांति के लिए शिक्षा।*